Price ₹ 5/-

हृदय और धड़कन

वर्ष-12, अंक-135, मार्च 20, 2021

कार्डियोलॉजिस्ट

डॉ. विनीत सांख्रला	+91-99250 15056	डॉ. मिलन चग	+91-98240 22107
डॉ. विपुल कपूर	+91-98240 99848	डॉ. उर्मिल शाह	+91-98250 66939
डॉ. तेजस वी. पटेल	+91-89403 05130	डॉ. हेमांग बक्षी	+91-98250 30111
डॉ. हिरेन केवडीया	+91-98254 65205	डॉ. अनिश चंदाराणा	+91-98250 96922
डॉ. गुणवंत पटेल	+91-98240 61266	डॉ. अजय नाईक	+91-98250 82666
डॉ. केयूर परीख	+91-98250 66664	डॉ. सत्य गुप्ता	+91-99250 45780

पिडियाट्रिक कार्डियोलॉजीस्ट

डॉ. कश्यप शेठ	+91-99246 12288	डॉ. मिलन चग	+91-98240 22107
डॉ. दिव्येश सादडीवाला	+91-82383 39980		

कार्डियाक सर्जन

डॉ. धीरेन शाह	+91-98255 75933
डॉ. धवल नायक	+91-90991 11133
डॉ. किशोर गुप्ता	+91-99142 81008

पिडियाट्रिक और स्ट्रकचरल हार्ट सर्जन

डॉ. शौनक शाह	+91-98250 44502

कार्डियोवास्क्युलर, थोरासीक और थोराकोस्कोपीक सर्जन

डॉ. प्रणव मोदी	+91-99240 84700

कार्डियाक एनेस्थेटिस्ट

डॉ. निरेन भावसार	+91-98795 71917
डॉ. हिरेन धोलकिया	+91-95863 75818
डॉ. चिंतन शेठ	+91-91732 04454

कार्डियाक इलेक्ट्रोफिजियोलोजीस्ट

डॉ. अजय नाईक	+91-98250 82666
डॉ. विनीत सांख्रला	+91-99250 15056
डॉ. हिरेन केवडीया	+91-98254 65205

निओनेटोलोजीस्ट और पीडियाट्रीक इन्टेन्सीवीस्ट

डॉ. अमित चितलीया	+91-90999 87400

JCI NABH NABH ER ACC International Centers Of Excellence

CIMS®
CARE INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES
Earning Trust with World-Class Practices

अवरुद्ध नलियों का इलाज : ऑपरेशन

पहले बताए अनुसार हस्तक्षेपी हृदयरोग विशेषज्ञों को (Interventional Cardiologist) जिसे हम मजाक में 'प्लम्बर और इलेक्ट्रिशियन' कहते हैं। इसी प्रकार हृदय के सर्जन को 'सुथार' (Carpenter) कह सकते हैं, क्योंकि वह बीमार दिल को ठोक पीट कर ठीक करता है। बाय-पास ऑपरेशन यह एक प्रचलित शब्द है, और यह कॉरोनरी आर्टरी बाय-पास ग्राफ्ट (सी.ए.बी.जी.) का संक्षिप्त रूप है। हृदय की धमनी के रोग (सी.ए.डी.) के इलाज के लिए जब जरूरत पड़े तब यह शल्यक्रिया करवा लेनी चाहिए। इस शल्यक्रिया को करने से हृदय में रक्तप्रवाह सुधरता है, छाती का दर्द और घबराहट दूर होती है, थकान कम होती है, दवाओं की जरूरत कम पड़ती है, शारीरिक श्रम के लिए कार्यक्षमता में बढ़ोतरी होती है और तंदरुस्ती की अनुभूति होती है। अगर सी.ए.बी.जी. शल्यक्रिया नहीं की जाए तो हृदय की धमनियों का अवरोध घातक सिद्ध हो सकता है।

अवरोधों को दूर करने का छोटा रास्ता (बायपास)

सौभाग्य से कभी भी पूरी की पूरी धमनी एक साथ अवरुद्ध नहीं होती है। उसके किसी एक भाग में ही अवरोध होता है। अवरोध के आगे की नली अधिकतर खुली होती है। अवरोध जब उलझन भरे होते हैं और एक से ज्यादा धमनियों में फैला हो तो हृदयरोग विशेषज्ञ बायपास करवाने की सलाह देते हैं। इस शल्यक्रिया में रक्त को रुकावट से दूर ले जाने के लिए एक नया रास्ता बनाया जाता है।

सी.ए.बी.जी. आखिर क्या है?

कॉरोनरी आर्टरी बायपास ग्राफ्ट (सी.ए.बी.जी.) एक बड़ी शल्यक्रिया है, जिसमे अपने शरीर के ही दूसरे किसी भाग से धमनी या / और नसें ले कर बिठाई जाती हैं (जिसे 'ग्राफ्ट' कहा जाता है), जिसकी मदद से हृदय के स्नायुओं को रक्त की जरूरी मात्रा पहुंचाई जा सके। हृदय की सतह के ऊपर इन रक्तवाहिनियों को हृदय की धमनी के अवरोध के बाद वाले भाग के साथ जोड़ दिया जाता है। इस प्रकार रक्त अब इस नये रास्ते से बहने लगता है। इस शल्यक्रिया में काम आने वाली धमनी या नस हाथ, पैर या छाती में से ली जाती है। ऐसी नसों को शरीर में से निकालने पर कोई नुकसान नहीं होता है। बायपास में सामान्यतया पाँव की सेफीनस नस,

हाथ की रेडियल धमनी या छाती में से बाँई अथवा दाहिनी इन्टरनल मेमोरी धमनी ली जाती है। ईश्वर का चमत्कार ही है कि बायपास के लिए जो नलियां शरीर से लेकर बायपास किया जाता है उनकी असली जगह को कोई नुकसान नहीं होता है।

क्योंकि रेडियल धमनी हृदयरोग के मरीज में बायपास रक्तवाहिनी की तरह उपयोग में आती है इसलिए विश्वभर में उसे केवल एन्जियोग्राफी के लिए बहुत कम पसंद किया जाता है।

पंप के ऊपर बायपास

हार्ट-लंग मशीन (हृदय और फैंफड़ों की तरह काम करता मशीन) का उपयोग करते हुए बायपास ऑपरेशन किया जाता है। इस साधन से शल्यक्रिया के दौरान हृदय की धड़कनों को बंद करना सम्भव होता है और इसे 'पंप बायपास' कहा जाता है, क्योंकि जब हृदय बंद होता है तब यह हार्ट-लंग मशीन हृदय के बदले अपने शरीर में रक्त को पंप करता है। जब हृदय को इस तरह बंद किया जाता है उस समय सर्जन 'ग्राफ्ट' को हृदय की धमनियों के साथ पक्की तरह से जोड़ देते हैं।

पंप के बिना बायपास

एक अन्य आधुनिकतम तकनीक भी है, जिसमें हार्ट-लंगमशीन का उपयोग नहीं किया जाता। इसमे धड़कते हृदय के साथ ही ऑपरेशन

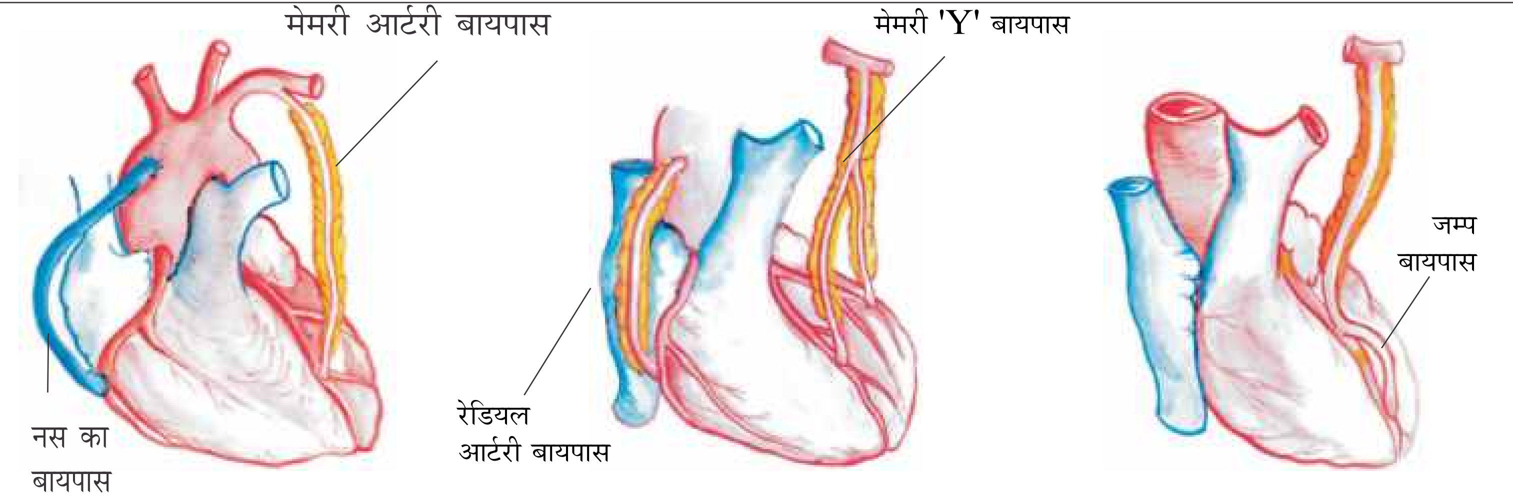

बायपास ऑपरेशन के विभिन्न प्रकार : ग्राफ्ट (धमनियों) को खास जगह पर जोड़ा जाता है।

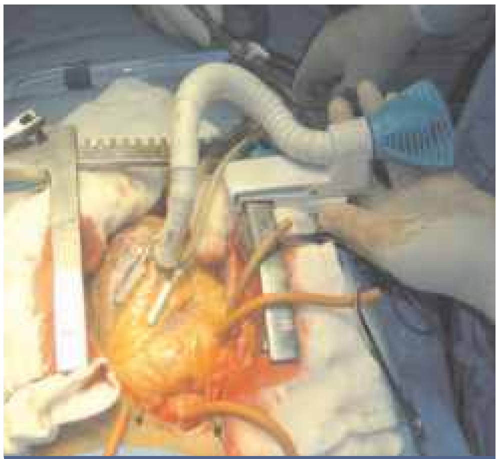

ऑक्टोपस : धड़कते हृदय के कुछ भाग को स्थिर रख ऑपरेशन किया जाता है।

किया जाता है। इससे हार्ट-लंग मशीन से होने वाले नुकसान (Side effects) टाले जा सकते हैं तथा बायपास सुरक्षित व तेज बनता है। पंप के साथ बायपास की तुलना में रोगी जल्दी से ठीक होता है, और बहुत कम मात्रा में रक्त देने की जरूरत पड़ती है। अधिकतर किस्सों में पंप के बिना बायपास करने की सलाह दी जा सकती है।

ऑक्टोपस

सर्जनों के द्वारा उपयोग में आने वाला ऑक्टोपस एक ऐसा यंत्र है जो ग्राफ्ट को जोड़ते समय हृदय के किसी छोटे से भाग को स्थिर रखता है, जिसमें चूसकनलियां (सकर्स) होती हैं, जो ऑक्टोपस की तरह हृदय के साथ चिपक जाती हैं और हृदय को नुकसान नहीं होता है। इस शल्यक्रिया के दौरान हृदय धड़कता रहता है, जिससे पंप बिना बायपास शल्यक्रिया को धड़कते हृदय की बायपास सर्जरी (Beating Heart Surgery) भी कहा जाता है।

एक दिन मैं ऑफिस में बैठा था और फोन आया 'आपके यहां शान्तिभाई पटेल नाम के कोई मरीज भर्ती है?' जी हाँ !'

'उनकी तबियत कैसी है?' 'ठीक है'

'उनको छुट्टी कब देंगे?"दो दिन में, आप कोन बोल रहे हैं?' 'मै शांतिभाई पटेल बोल रहा हूं, आपसे यह सब पूछने का समय ही नहीं मिलता इसलिए आपको रूम में से फोन करके पूछ रहा हूं।'

सीम्स अस्पताल

18

TAVI
(ट्रान्सकेथेटर अेओर्टीक वाल्व ईम्प्लान्टेशन)

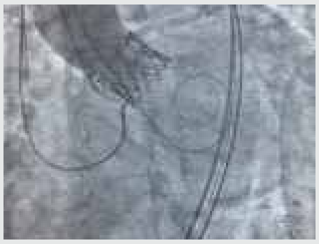

Balloon Inflatable (Hybrid) Myvalv

Self Expanding (Supra-Annular) Evolut Valve

सर्जरी के बिना रोगग्रस्त वाल्व को बदलने की प्रक्रिया

अस्पताल में 100 % सफलता

गुजरात में सब से ज्यादा

CIMS®
CARE INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES
Earning Trust with World-Class Practices

JCI NABH NABH ER ACC International Centers Of Excellence

हृदय की शल्यक्रिया के बाद

हृदय की सर्जरी के बाद ठीक होने में कुछ समय लगता है। थोड़ा दर्द व खांसी हो सकती है, पर शल्यक्रिया से होने वाले बड़े फायदे को देखते हुए यह तकलीफों को तो नहीं के बराबर कहा जाता है। हमने देखा कि बायपास शल्यक्रिया किसलिए करनी पड़ती है। अब हम देखेंगे कि इस प्रकार की अतिविशिष्ट शल्यक्रिया के बाद क्या होता है।

बायपास के बाद के विशेष सुधार

बायपास के बाद आई.सी.यु. में रहना पड़ता है

बायपास के बाद रोगी एन्जायना और श्वसन की तकलीफ से मुक्त हो जाता है, और दैनिक क्रियाएं जैसे, चलना, दौड़ना, साइकिल चलाना, तैरना इत्यादि जैसी शारीरिक क्रियाओं के लिए अधिक क्षमता प्राप्त कर सकता है।

सफल बायपास शल्यक्रिया के बाद में होने वाले ये सुधार इतने रोमांचक होते हैं कि इस प्रकार की शल्यक्रियाओं को आधुनिक शल्यक्रिया के इतिहास में सबसे महान सफलता माना जाता है।

करना या नहीं करना

आम लोगों में हृदय की शल्यक्रिया को अभी

२ - ३ दिनो में रोगी बैठकर बात करता है

भी भयानक,खतरनाक, और जटिल माना जाता है। पर असल में ऐसा नहीं है, वास्तव में यह एक सुरक्षित प्रक्रिया (procedure) है। बहुत कम लोग जानते हैं कि सामान्यतया बायपास में १ से २ प्रतिशत तक ही खतरा है, जो अन्य किसी ऑपरेशन जितना ही या उससे भी कम है।

इसलिए हृदय की धमनी के रोग के साथ जीने के खतरे से अच्छा है बायपास करवा लेना, क्योंकि शल्यक्रिया की सफलता की संभावना ९८ से ९९ प्रतिशत रहती है। अधिक महत्त्वकी बात यह है कि शल्यक्रिया के बाद के फायदे हृदयरोग के हमले के निरंतर खतरे की तुलना में कहीं ज्यादा हैं।

ऐसा जीवन तो जैसे माथे पर लगातार लटकती तलवार के साथ जीने जैसा है। बायपास के बादमें अचानक हृदयरोग के हमले की लटकती तलवार का डर दूर होता है।

फायदे : कितनी जल्दी?

जैसे ही ग्राफ्ट जोड़ा जाता है, और हृदय को अधिक रक्त मिलना शुरु होता है, बायपास के फायदे मिलना उसी क्षण से शुरु हो जाते हैं। हृदय को अधिक व शुद्ध रक्त की मात्रा मिलने से वह अधिक जोश के साथ काम करना शुरु करता है,

और इस कारण हृदयरोग के हमले का खतरा भी काफी हद तक कम हो जाता है। हृदय के वाल्व के रोगियों को भी शल्यक्रिया के कुछ समय पश्चात् ही फायदे मालूम पड़ने लगते हैं।

अब हम देखेंगे सर्जनों के द्वारा उनके रोगियों के हृदय को नया जीवन दिए जाने के बाद उनके ठीक होने के विभिन्न चरण।

पहला दिन

अधिकतर रोगी शल्यक्रिया के बाद के २ - ३ घंटे में होश में आ जाते हैं। सामान्यतया दर्द कम व सहनीय होता है। रोगी अपने आप आराम से सांस ले सकता है। परन्तु रोगी के अनेक नलियां और लाइनें जुड़ी होती हैं जिससे वो न ज्यादा हिल सकता और न उसे हिलने दिया जाता है।

दूसरा दिन

इस समय तक अधिकतर रोगी अपने आसपास के वातवरण के प्रति पूरी तरह सजग हो चुके होते हैं, और पलंग पर बैठ सकते हैं। सवेरे उन्हें द्रव्य आहार (liquid dite) दिया जाता है। शाम तक उन्हे कुछ हल्की खुराक लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। अधिकतर रोगी समय बिताने के लिए टीवी देखते हैं, पेपर पढ़ते हैं या हल्का संगीत (Light Music) सुनते हैं।

तीसरा दिन

इस समय तक रोगी का रक्तचाप, हृदय की धड़कनें व उसका श्वास सामान्य हो जाता है। छाती में डाली कई नलियों में से आता द्रव्य एकदम कम हो जाता है, और फिर उन नलियों को निकाल दिया जाता है। इन नलियों के निकाले जाने के बाद रोगी अपने स्वस्थ होते हृदय के साथ अपनी पहली सैर को निकलता है। अगर मरीज की तबियत स्थिर हो तो उसे बाथरूम व लेट्रिन तक स्वयं चलकर जाने दिया जाता है।

चौथे दिन से छुट्टी मिलने तक

इस दिन रोगी को आई. सी. यु. (इन्टेंसिव केयर युनिट) से हटा कर साधारण कमरे में रखा जाता है। अब रोगी इतना स्वस्थ हो चुका होता है वह अपने आप हिल डुल सकता है, थोड़ा घूम फिर सकता है, लैट्रिन तक आ जा सकता है, और खाने के लिए बैठ भी सकता है।

खांसी व शरीर में दर्द ये दो चीजें अगले ३-४ दिन तक परेशान कर सकती हैं, किन्तु छुट्टी मिलने तक तो रोगी भली भांतीचलने लगता है और ३-४ पायदान भी चढ़ और उतर सकता है। अधिकतर रोगियों को शल्यक्रिया के ५-७ दिन के बाद छुट्टी मिल जाती है।

छुट्टी मिलने के बाद

घर जाने के बाद धीरे - धीरे रोगियों को उनके एन्जायना के दर्द से छुटकारा मिलने का एहसास होता है। उनको थोड़ी कमजोरी जरूर महसूस होती होगी, पर सामान्यरूप से वे हर तरह से स्वस्थता महसूस करते हैं।

आने वाले दिनो, सप्ताह, व महिनों में दर्द धीरे - धीरे कम होता है और खांसी बंद हो जाती है। छाती, हाथ व पैर के उपर शल्यक्रिया को घाव शल्यक्रिया के तीन से चार सप्ताह में कम होने लगते हैं।

बायपास के बाद धीरे - धीरे काम की शुरुआत

कुछ झिझक

बहुत से रोगियों को यह सोचते है, कि क्या वो शल्यक्रिया के पहले वाली स्वस्थता पा लेंगे, और क्या पहले की तरह अपने काम को संभाल पाएंगे या नहीं। इसका जवाब स्वाभविक है... हां। वास्तव में अधिकतर रोगी ये सारे काम उनकी शल्यक्रिया से पहले कर सकते थे उससे बेहतर रूप से कर सकते हैं, और इसलिए तो उन पर बायपास किया गया था।

JCI NABH NABH ER ACC International Centers Of Excellence
CIMS®
CARE INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES
Earning Trust with World-Class Practices

दूध का जला छाछ भी फूंक कर पीता है

यह कहने की जरूरत नहीं है कि बायपास कराने के बाद व्यक्ति को अब अधिक सावधान रहना चाहिए। हृदय जल्दी से सामान्य हो जाए और भविष्य में कोई हृदयरोग हो इसके लिए अपनी जीवन शैली में परिवर्तन बहुत आवश्यक है। बायपास के सभी रोगियों को यह याद रखना चाहिए कि यदि वे अपनी नई बायपास की गई धमनियों को खुली रखने का प्रयत्न नहीं करेंगे तो कुछ वर्षों के बाद यह नई धमनियां भी अवरुद्ध हो सकती हैं।

आदमी कितना स्वस्थ हो सकता है?

इसका आधार, शल्यक्रिया के समय हृदय और रक्तवाहिनियों की स्थिति क्या थी, उस पर रहता है। अधिकतर रोगी दिन में ४५ मिनट से १ घंटे तक चलने जैसी हल्की कसरत कर सकते हैं, और करनी भी चाहिए। तैरने जैसी हल्की कसरतें भी कर लेनी चाहिए। बायपास ऑपरेशन होने के तीन से चार सप्ताह के बाद जातीय सम्बंध पूर्ववत बांधे जा सकते हैं।

व्यवसाय या कामकाज कब शुरु किया जा सकता है

शल्यक्रिया के एक सप्ताह बाद में काम शुरु करने में कोई परेशानी नहीं है। फिर भी व्यक्ति को अपने काम करने के समय में नियमितता लानी चाहिए।

आहार, आदतें और वजन

बायपास वाले रोगी का आहार पौष्टिक रहना चाहिए। खुराक के बारे में सलाह लेकर उसका नियमित रूप से पालन करना बहुत जरूरी है। अधिक कोलेस्ट्राल व अधिक चरबी वाली खुराक से दूर रहना चाहिए। उसका सर्वश्रेष्ठ उपाय है, भोजन में अधिकतम हरी सब्जी, फल व फलों का रस दिया जाना चाहिए।

तम्बाकू से खतरों की चर्चा अन्तिम प्रकरण में की गई है। कई लोगों में मान्यता होती है कि शल्यक्रिया के बाद शराब के सेवन से मदद मिलती है। किसी भी अनुसंधान से ऐसा कुछ साबित नहीं हुआ है। जिनका बायपास हो चुका हो ऐसे सब रोगियों को अपने वजन को नियंत्रण में रखना चाहिए।

डाक्टरी सलाह

शल्यक्रिया के बाद पहले और तीसरे महिने में डाक्टरी जांच के लिए जाने की सलाह दी जाती है। स्ट्रेस टेस्ट (टी.एम.टी.) और इकोकार्डियोग्राम की जांच की जाती है। उसके बाद साल में एक बार 'लिपिड प्रोफाईल' (कोलेस्ट्रोल वगैरह), टी.एम.टी. और इको करवा लेना चाहिए।

आजीवन दवाएं

एस्परिन जैसी कई दवाएं बायपास के बाद आजीवन लेनी पड़ती हैं। एस्परिन के कारण कई बार रोगी के पेट में जलन होती है, फिर भी यह ध्यान से लेनी चाहिए। इन परिस्थितियों में एसिडिटी की दवा भी साथ में लेनी पड़ती है। सम्भवतया खाना खाने के बाद एस्परिन लेने से उससे होने वाली जलन टाली जा सकती है। 'स्टेटिन्स' और कोलेस्ट्रोल कम करने की खास दवा किसी फिजिशियन या हृदयरोग विशेषज्ञ की देखरेख में ली जानी चाहिए।

डायबिटीज व हाई ब्लडप्रेशर

यह पुराने, और चुपचाप खत्म करने वाले रोगों को तो जीवन भर काबू में रखना चाहिए ! यह याद रखें कि बायपास से डायबिटीज और हाई ब्लडप्रेशर खत्म नहीं होता। संक्षिप्त में, हृदय की बड़ी शल्यक्रिया के बाद रोगी की यथायोग्य देखभाल सबसे महत्त्वपूर्ण है।

बायपास के बाद नई जिंदगी ... आशा की नई किरणें

सौजन्य

'हृदय की बात दिल से' -
लेखक - डॉ. केयूर परीख

सीम्स ओर्थोपेडीक्स | सीम्स अस्पताल, अहमदाबाद

उम्र के साथ सहारे की नहीं,
श्रेष्ठ डॉक्टर की जरुरत है ।

- फ्रेक्चर (ट्रोमा - Trauma) हरेक प्रकार के फ्रेक्चर
- जोईन्ट रिप्लेसमेन्ट (हीप-Hip, नी-Knee, शोल्डर-Shoulder)
- फुट एवं ऐंकल (पैर और पैर की टखने) का निदान
- स्पोटर्स (खेल-कूद) के दौरान होने वाली चोट
- आथ्रोस्कोपी (दुरबीन से होने वाला ओपरेशन)
- रीविज़न सर्जरी
- फ्लेट-फूट सर्जरी

ओर्थोपेडीक और ट्रोमा

डॉ. प्रणव शाह
डायरेक्टर - सिम्स ट्रोमा
सीनियर ओथोपेडीक, ट्रोमा और हिप सर्जन
मो. +91 99798 95596

डॉ. कृणाल पटेल
ओथोपेडीक, आथ्रोस्कोपी और जोईन्ट रिप्लेसमेन्ट सर्जन
मो. +91 97235 53665

जोईन्ट रीप्लेशमेन्ट और आथ्रोस्कोपी

डॉ. सतीष पटेल
डायरेक्टर - आथोप्लास्टी और आथ्रोस्कोपी
सीनीयर कन्सलटन्ट
जोईन्ट रिप्लेसमेन्ट और आथ्रोस्कोपी
मो. +91 98240 58332

डॉ. समीप शेठ
आर्थोपेडीक और आथ्रोस्कोपी सर्जन
(घुटना और कंधा)
मो. +91 98334 94466

फुट और ऐंकल (पैर - पैर का टखना)

डॉ. पार्थ पारेख
ओथोपेडीक, फुट और ऐंकल सर्जन
(पैर - पैर का टखना)
मो. +91 97123 00124

CIMS®
CARE INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES
Earning Trust with World-Class Practices

JCI NABH NABH ER ACC International Centers Of Excellence

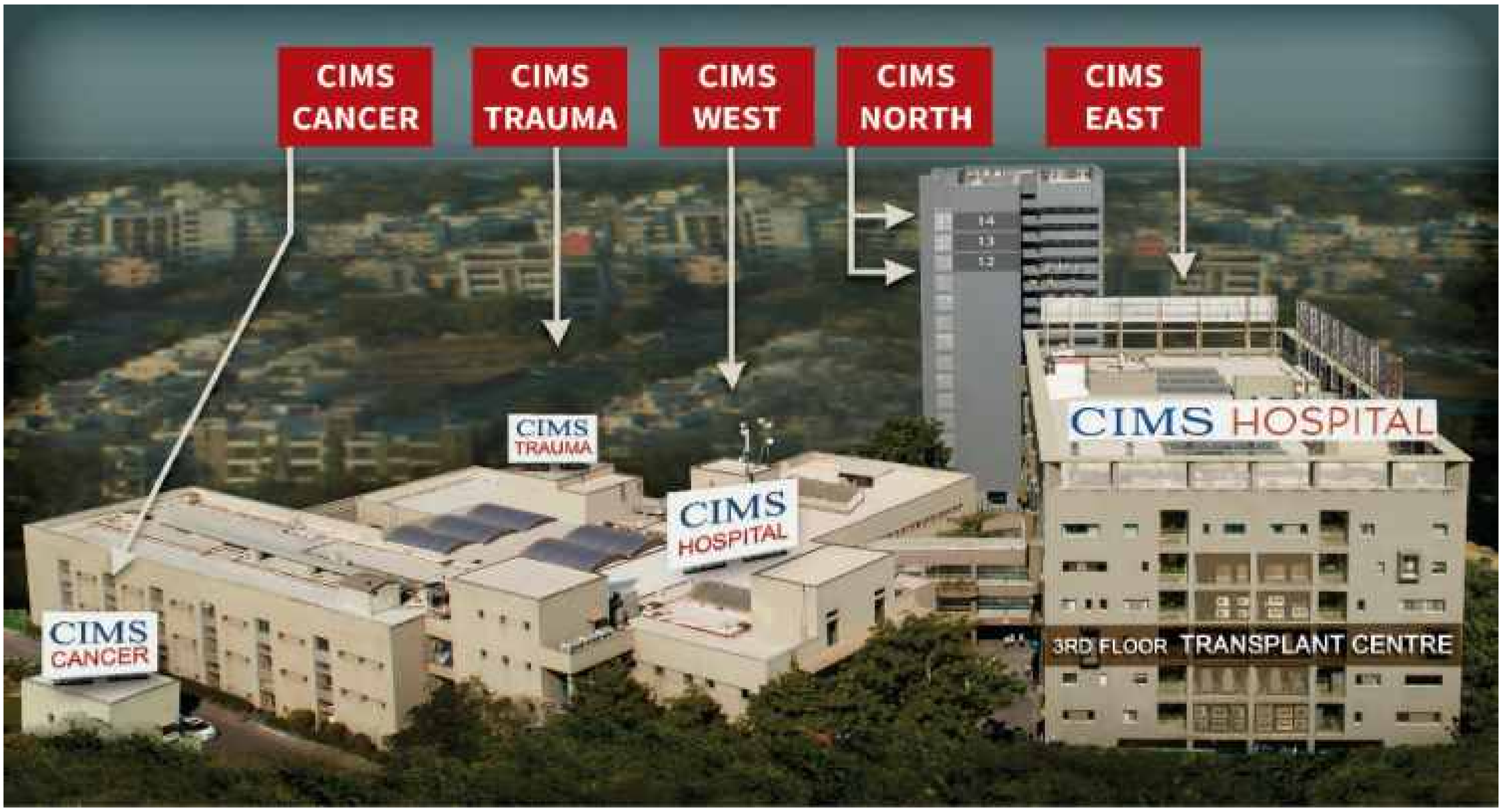

सीम्स नोर्थ - ओपीडी सेन्टर - अहमदाबाद

सीम्स होस्पिटल के पास (सीम्स नोर्थ - सीटी सेन्टर -२, १२वी मंजिल)

विशाल, अत्याधुनिक ओपीडी सेन्टर

उपलब्ध ओपीडी सेवायें

- कार्डियोलॉजी
- डर्मेटोलोजी
- एन्डोक्रायनोलोजी
- गेस्ट्रोएन्ट्रोलोजी
- जनरल सर्जरी
- जिनेटिक्स
- ईन्फेक्शीयश डिसीझ
- नेफ्रोलोजी
- सायक्रीयाट्रीक
- पल्मोनोलोजी
- रुमेटोलोजी
- युरोलोजी
- वास्क्युलर सर्जरी

एपोईन्टमेन्ट के लिए +91-79-4805 1008 | मोबाईल : +91-98250 66661 | समय : सुबह 9:00 - शाम 6:00 (सोम से शनि)

JCI
NABH
NABH ER
ACC International Centers Of Excellence
CIMS®
CARE INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES
Earning Trust with World-Class Practices

सिम्स कैंसर सेन्टर

सिम्स अस्पताल, अहमदाबाद

सर्जरी । रेडियेशन । किमोथेरापी

सब से बडी कैंसर टीम को मिलके, आया मुझे "चैन"

क्योंकि मैं जानती हुं कैंसर की जंग में कई साथीयों की जरुरत होती है ।

कैंसर सेवायें

हेड एन्ड नेक कैंसर
- मुँह और गले का कैंसर
- थाइरोइड कैंसर

जीआई कैंसर
- अन्ननली का कैंसर
- पेट और पैनक्रियाटीक कैंसर
- आंत का कैंसर
- लीवर कैंसर

बल्ड कैंसर
- ल्युकेमिया और लिम्फोमा
- बोन मेरो ट्रान्सप्लान्ट

युरो कैंसर
- किडनी, मूत्राशय और टेस्टीक्युलर कैंसर
- प्रोस्टेट कैंसर

गायनेक (वुमन) कैंसर
- स्तन कैंसर
- अंडाशय का कैंसर
- गर्भाशय कैंसर
- गर्भाशय के मुख (सर्वीक्स) का कैंसर

अन्य
- फेफड़े का कैंसर
- न्यूरो कैंसर
- हड्डी कैंसर
- त्वचा कैंसर

गुजरात की सबसे अनुभवी और कुशल कैंसर टीम

रेडियेशन कैंसर टीम

डॉ. मौलिक भेंसदडिया
डॉ. मल्हार पटेल
डॉ. प्राप्ती पटेल देसाई
डॉ. देवांग डी. भावसार
डॉ. हिरक व्यास

सर्जीकल कैंसर टीम

डॉ. दर्शन आर. भणसाली
डॉ. जयेश वी. पटेल
डॉ. नटू पटेल
डॉ. तरंग एच. पटेल
डॉ. अशोक पटेल

डॉ. मनिष गांधी (जीआई कैंसर सर्जन)
डॉ. महावीर तडैया (गायनेक और गेस्ट्रो कैंसर सर्जन)

डॉ. मोना शाह (गायनेक कैंसर सर्जन)

डॉ. वत्सल कोठारी (प्लास्टीक सर्जन)
डॉ. रुपेश शाह (युरो-कैंसर सर्जन)

मेडीकल कैंसर टीम

डॉ. राहुल जयस्वाल
डॉ. चिंतन शाह
डॉ. चिराग देसाई
डॉ. संकेत शाह
डॉ. दीपा त्रिवेदी

अपोईन्टमेन्ट के लिए : **+91-79-4805 1257** | मोबाईल **+91-99792 75555** | समय : सुबह **9:00** - शाम **7:00 PM** | ईमेल : **cims.cancer@cimshospital.org**

क्या आपको डॉक्टर की मुलाकात करने में दिक्कत होती है ?

CIMS CALLDOC

टेली कन्सल्टेशन

आज ही एपोईन्टमेन्ट बुक करे

फोन से **+91 70690 49567**
सुबह 9:30 से शाम 6.00, सोम से शनि
या इ-एपोईन्टमेन्ट से (www.cims.org)

हम आपसे शीध्र ही संपर्क करेंगे

"Hriday Aur Dhadkan" Registered under RNI No. GUJHIN/2009/28021
Published 20th of every month
Permitted to post at PSO, Ahmedabad-380002 on the 26th to 30th of every month under
Postal Registration No. GAMC-1730/2019-2021 issued by SSP Ahmedabad valid upto 31st December, 2021
Licence to Post Without Prepayment No. PMG/HQ/088/2019-21 valid upto 31st December, 2021

If undelivered Please Return to :

CIMS Hospital, Nr. Shukan Mall,

Off Science City Road, Sola, Ahmedabad-380060.

Ph. : +91-79-2772 2771-75

Fax: +91-79-2771 2770

Mobile : +91-98250 66664, 98250 66668

"हृदय और धड़कन" का अंक प्राप्त करने के लिये : अगर आपको "हृदय और धड़कन" का अंक चाहिए तो इसका मूल्य ₹ 60 (12 अंक) है । इसको प्राप्त करने के लिये केश या चेक/डीडी सीम्स होस्पिटल प्रा. ली. के नाम से और आपका नाम और पुरे पते के साथ हमारी ओफिस हृदय और धड़कन डिपार्टमेन्ट, सीम्स अस्पताल, शुकन मॉल के पास, ऑफ सायन्स सिटी रोड, सोला, अहमदाबाद - 380060 पर भेज दे । फोन नं. : +91-79-4805 1059/1060

सिम्स अस्पताल मेडिकल टीममें नये डॉक्टर शामिल

अब हररोज ओपीडी में उपलब्ध

समय : सुबह १० से दोपहर १ बजे तक (सोम से शनि)

डॉ. मोना नमन शाह
MBBS, M.D. (Obestetrics & Gynaecology)
Fellowship Gynaec Oncology (CMC Vellore)
कन्सलटन्ट गायनेक ओन्कोसर्जन
लेप्रोस्कोपीक केन्सर सर्जन, **CRS, HIPEC**
(Hyperthermic Intraperitoneal Chemotherapy)
मो. +91-98795 05063 | +91-79904 75291
mona.shah@cimshospital.org

डॉ. कामिनी पटेल
MBBS, DGO (Diploma in Gynaecology & Obstetrics), DICOG
कन्सलटन्ट आईवीएफ **(IVF)**
मो. +91-94260 48748
kamini.patel@cimshospital.org

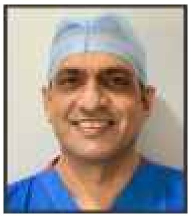

डॉ. सतीष पटेल
MS (Ortho), FRCS
डायरेक्टर - आथ्रोप्लास्टी एन्ड आथ्रोस्कोपी
सीनीयर कन्सलटन्ट जोयन्ट रीप्लेशमेन्ट एन्ड आथ्रोस्कोपी
मो. +91-98240 58332
satish.patel@cimshospital.org

अपोईन्टमेन्ट के लिए संपर्क करे : +91-79-4805 1257| मोबाईल: +91-99792 75555 - समय : सुबह 9:00 - शाम 7:00 (सोम से शनि)

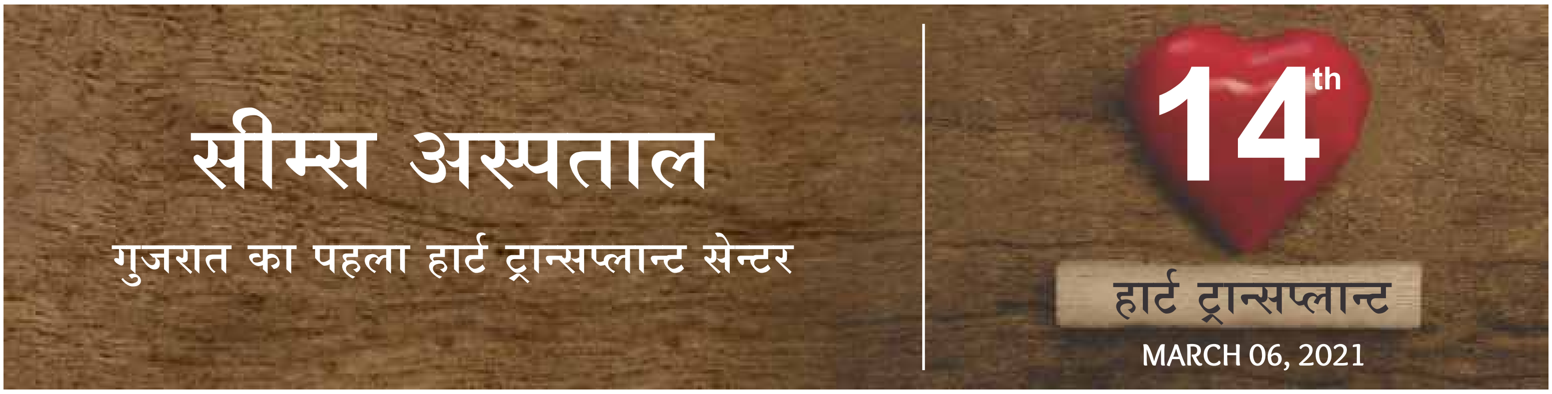

CIMS Hospital Pvt. Ltd. | CIN : U85110GJ2001PTC039962 | info@cims.org | www.cims.org

मुद्रक, प्रकाशक और संपादक डॉ. हेमांग बक्षी ने सीम्स अस्पताल की ओर से
हरिओम प्रिन्टरी, 15/1, नागोरी एस्टेट, ई.एस.आई डिस्पेन्सरी, दुधेश्वर रोड, अहमदाबाद-380004 से मुद्रित किया और
सीम्स अस्पताल, शुकन मॉल के पास, ऑफ सायन्स सिटी रोड, सोला, अहमदाबाद-380060 से प्रकाशित किया।

JCI NABH NABH ER ACC International Centers Of Excellence

CIMS®
CARE INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES
Earning Trust with World-Class Practices